Date – 11|06|2020

Name- Jyoti Kumari

College Name - Shakuntalam Institute of teachers education At - Krihindi Kumhu station sasaram

Class - B.Ed 1st year

paper - C_2

Topic - विद्यालय का नाम एवं प्रकार

Scanned by TapScanner

विद्यालय

विद्यालय का अर्थ –

शाब्दिक अर्थ – विद्यालय दो शब्दों के योग से बना है.

विद्या + आलय = विद्यालय

विद्यालय से तात्पर्य इस प्रकार के स्थल से है जहाँ पर विद्या प्रदान की जाती है। अंग्रेजी में विद्यालय के लिए 'स्कूल' 'School' शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'SKhola' और 'SKhole' से हुई है। इसका तात्पर्य – अवकाश होता है। अवकाश इसलिए बोला जाता है कि प्राचीन यूनान में अवकाश के स्थानों को ही विद्यालय के नाम से संबोधित किया जाता था। अवकाश काल को ही आत्म - विकास समझा जाता था जिसका अभ्यास अवकाश नामक निश्चित स्थान पर किया जाता था धीरे- धीरे यही अवकाश स्थल एक निश्चित उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम को ज्ञान प्रदान करने वाली संस्थाएँ अर्थात स्कूल बन गए।

Scanned by TapScanner

2

परिभाषा :- **जे० एम० रॉस के अनुसार** -

"विद्यालय वे संस्थायें है जिनको सभ्य - मानव ने इस दृष्टि से स्थापित किया है कि समाज में सुव्यवस्थित तथा योग्य सदस्यता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिले।"

जॉन डी वी के अनुसार - "विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ बालक के वांछित विकास की दृष्टि से उसे विशिष्ट क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा दी जाती है।

व्यापक अर्थ => सामान्य रूप से विद्यालयों को सूचना विक्रेताओं के रूप में माना जाता है, इस अवधारणा का स्पष्टीकरण पेस्टालॉजी ने इस प्रकार किया है,

"ये विद्यालय, अमनोवैज्ञानिक है जो बालक को उसके स्वभाविक जीवन से दूर कर देते है उनकी स्वतंत्रता को 'निरकुंशता से रोक देते

Teacher's Signature..........

3 रोक देते हैं, और उसे मनाकर्षक
बदलो को याद रखने के लिए
भेड़ के समान हांकते हैं और
हफ्तों दिनों, सप्ताहों, महीनों तथा
वर्षों तक दर्दनाक, जंजीरों से
बांध देते है।"

अर्थ में अपने व्यापक
लघु रूप है समाज का
तथा विश्वशांति सद्भावना, प्रेम
का केन्द्र है।

एस० बाल कृष्ण जोशी के विचार
में :-
" विद्यालय ईंट और गारे
से बनी हुई इमारत नहीं है,
जिसमें विभिन्न प्रकार के छात्र
एवं शिक्षक होते हैं। विद्यालय
बाजार नहीं है जहाँ विभिन्न
योग्यताओं वाले अनिच्छुक व्यक्तियों
को ज्ञान बेचा जाता है।
विद्यालय रेलवे प्लेटफार्म नहीं
है जहाँ विभिन्न उद्देश्यों से
व्यक्तियों की भीड़ जमा होती है
विद्यालय आध्यात्मिक संगठन है, जिसका
अपना स्वयं का विशिष्ट व्यक्तित्व
है। विद्यालय गतिशील समुदायी
केन्द्र है, जो चारों ओर
जीवन और शक्ति का संचार
करता है। विद्यालय एक आश्चर्य-
जनक भवन है, जिसका आधार

Teacher's Signature.........

Scanned by TapScanner

सद्भावना है। जनता की सद्भावना, माता-पिता की सद्भावना सरांश में एक सुखी परिवार, एक सुसंचालित विद्यालय मंदिर एक सामाजिक, एक पवित्र रूप में केन्द्र, लघु वृन्दावन है, एक राज्य और मनमोहक इसमें इन सब बातों का मिश्रण होता है।"

विद्यालय की आवश्यकता :-

सभ्यता के आदि काल में परिवार समुदाय और धार्मिक संस्थाएं ही शिक्षा की मुख्य संस्थाएं थी। परन्तु जैसे-जैसे मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विकास किया, वैसे-वैसे उसे उस सब ज्ञान-विज्ञान को सुरक्षित रखने और उससे आगे बढ़ाने वाली पीढ़ी को अवगत कराने के लिए विद्यालयों का निर्माण करना पड़ा।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विकास के साथ-साथ इस युग में जनसंख्या में भारी विस्फोट हुआ है। इस तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की शिक्षा की व्यवस्था परिवार समुदाय और धार्मिक संस्थाओं के द्वारा नहीं की जा सकती। अतः इस

5

इन्हीं से ही आज विद्यालयों की बड़ी आवश्यकता एवं उनका बहुत बड़ा महत्व है।

Scanned by TapScanner